

गायत्री माता को आरती: जयांते जय गायत्री माता

टेक

जयति जय गायत्री माता, जयति जय गायत्री माता ॥

पद 1

आदि शक्ति तुम अलख निरंजन, जग पालन करीं।
दुःख, शोक, भय, क्लेश, कलह, दारिद्र्य, दैन्य हर्त्री ॥

पद 2

ब्रह्मरूपिणी, प्रणत पालिनी, जगद्धातृ अम्बे।
भव-भय हारी, जन हितकारी, सुखदा जगदम्बे ॥

पद 3

भयहारिणि, भवतारिणि, अनघे, अज आनन्द राशी।
अविकारी, अघहरी, अविचलित, अमले, अविनाशी ॥

पद 4

कामधेनु सत्-चित्-आनन्दा, जय गंगा गीता।
सविता की शाश्वती शक्ति, तुम सावित्री सीता ॥

पद 5

ऋग्, यजु, साम, अथर्व प्रणयिनी, प्रणव महामहिमे।
कुण्डलिनी सहस्रार सुषुम्ना, शोभा गुण गरिमे ॥

पद 6

स्वाहा, स्वधा, शची, ब्रह्माणी, राधा, रुद्राणी।
जय सतरूपा, वाणी, विद्या, कमला, कल्याणी ॥

पद 7

जननी हम हैं दीन, हीन, दुःख, दारिद्र के घेरे।
यदपि कुटिल, कपटी कपूत, तऊ बालक हैं तेरे ॥

पद 8

स्नेह सनी करुणामयि माता, चरण शरण दीजै।
बिलख रहे हम शिशु सुत तेरे, दया दृष्टि कीजै ॥

पद 9

काम, क्रोध, मद, लोभ, दम्भ, दुर्भाव, द्वेष हरिये।
शुद्ध बुद्धि, निष्पाप हृदय, मन को पवित्र करिये ॥

पद 10

तुम समर्थ सब भाँति तारिणी, तुष्टि, पुष्टि, त्राता।
सत मारग पर हमें चलाओ, जो है सुखदाता ॥